2018-19

वार्षिक प्रतिवेदन

डा० राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय

पूसा, (समस्तीपुर), बिहार - 848125

वार्षिक प्रतिवेदन

(2018-19)

डा० राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा, (समस्तीपुर), बिहार - 848125

वार्षिक प्रतिवेदन

2017-18

संरक्षक :
डॉ. आर. सी. श्रीवास्तव
कुलपति
डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

संकलन और संपादन :
डॉ. एम. एन. झा
निदेशक, शिक्षा
डॉ. पी. के. झा
प्राध्यापक, पादप– रोग विज्ञान
डॉ. शंकर झा
सहायक प्राध्यापक, मृदा विज्ञान

वैज्ञानिक हिंदी अनुवाद एवं संपादन :
डॉ. राकेशमणि शर्मा
विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष
श्रीगुप्तनाथ त्रिवेदी
सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष

सहयोग :
श्री अजय कुमार सिंह
सहायक

तकनीकी सहयोग :
श्री मनीष कुमार
पुस्तकालय सहायक

प्रकाशन प्रभार :
प्रकाशन प्रभाग,
डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा, (समस्तीपुर), बिहार – 848125

मुद्रक :
के. जी. इन्टरप्राईजेज
पटना – 800 006

AUTHENTICATED

डॉ० राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, बिहार

वर्ष 2018–19 की अवधि में डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा की समीक्षा

पृष्ठभूमि

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय (भूतपूर्व राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय) मूल रूप से 1905 में भारत के प्रथम इंपीरियल कृषि अनुसंधान संस्थान के रूप में स्थापित किया गया था, जिसका मुख्य उद्येश्य पूरे देश के लिए कृषि गतिविधियों, अनुसंधान और शिक्षा का एक केंद्र बनने के साथ भारत और विदेशों से सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाएं आकर्षित करना था। वर्ष 2016 में इस विश्वविद्यालय का केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में रूपांतरण किया गया ताकि कृषि और संबद्ध विज्ञान के क्षेत्र में ज्ञान को आगे बढ़ाया जाय। विश्वविद्यालय द्वारा उच्च कोटि की गुणवत्ता वाले मानव संसाधन विकसित किया जा रहा है तथा कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में शिक्षण, अनुसंधान एवं प्रसार कार्य में नेतृत्व प्रदान कर रहा है। विश्वविद्यालय आमतौर पर समूचे देश के लिए एवं विशेष तौर पर बिहार राज्य में कृषक समुदाय की सेवा करने के लिए दृढ़ता से प्रतिबद्ध है

उपलब्धियॉ

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा एक जीवंत शिक्षण संस्थान के रूप में उभर रहा है, जिसका मुख्य केन्द्र विन्दू गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्रदान करना, परिस्थिति के अनुरूप टिकाउ कृषि तकनीक का विकास एवं किसान समुदाय को उत्कृष्ट आजीविका सुनिश्चित करना है। वर्ष 2018–19 में विश्वविद्यालय में उल्लेखनीय प्रगति की है जिसकी अभिव्यक्ति छात्रों की संख्या एवं विविधता में वृद्धि, एक नए यूजी कार्यक्रम की शुरुआत, छह नए पीजी कार्यक्रम एवं कई नई किस्मों और प्रौद्योगिकियों के विकास के रूप में परिलक्षित होती है। समीक्षा अवधि के दौरान विश्वविद्यालय की मुख्य उपलब्धियाँ नीचे दी गई हैं

शिक्षा

विश्वविद्यालय ने वर्ष 2018–19 के दौरान शैक्षणिक मोर्चे पर उत्कृष्ट प्रगति की है। एक यूजी प्रोग्राम और छह पीजी प्रोग्राम की शुरुआत के साथ, छात्र क्षमता 307 से बढ़ाकर 609 कर दी गई, यूजी के छह विषयों में तथा पीजी के 24 विषयों में, एवं पी.एच.डी. के 9 विषयों में कुल 555 छात्रों का नामांकन हुआ जिसमें 21 राज्यों के छात्रों का प्रतिनिधित्व मिला। इस विश्वविद्यालय से स्नातक होने वाले कुल पैंसठ छात्रों ने अलग–अलग राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा (नेट / एसआरएफ / जेआरएफ / गेट) में सफलता पाई है। नामांकन प्रक्रिया को केंद्रीकृत, कैशलेस, परेशानी मुक्त, एकल खिड़की प्रणाली की शुरुआत के कारण नामांकन में आसानी एवं समय की बचत हुई। क्लास रूम को स्मार्ट क्लास रूम में पोडियम सुविधा के साथ विकसित किया गया और डिजिटल नोटिस बोर्ड भी प्रतिस्थापित किया गया। सॉफ्ट स्किल विकास और कैरियर काउंसलिंग के लिए कार्यकम आयोजित किया गया, साथ ही प्लेसमेंट सैल को सुदृढ किया गया।

अनुसंधान

विश्वविद्यालय विभिन्न कृषि–पारिस्थितिकी और सामाजिक–आर्थिक स्थिति के अनुरूप किसानों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए फसल की किस्मों और प्रौद्योगिकियों के विकास के लिए प्रतिबद्ध है। वर्ष 2018–19 के दौरान, चार उन्नत फसल किस्मों को जारी किया गया था यथा–राजेंद्र कौनी (फॉक्सटेल), राजेंद्र नीलम (एरोबिक धान) को सीवीआरसी द्वारा जारी किया, गया इसके अलावा पाँच प्रौद्योगिकियाँ विकसित की गई जैसे– राजेंद्र मत्स्यबंधु, नाव आधारित सौर उर्जा संचालित सिंचाई प्रणाली, सौर ऊर्जा से संचालित सबमर्सिबुल पंप, पपीता रोगों का प्रबंधन, और घरेलू एवं प्रक्षेत्र अपशिष्ट प्रबंधन। इस दौरान बारह नई परियोजनाओं को भी मंजूरी दी गई।

प्रसार शिक्षा

विश्वविद्यालय अपने सुव्यवस्थित बुनियादी ढांचे के द्वारा विभिन्न प्रसार कार्यक्रम जैसे – प्रशिक्षण, प्रदर्शन, किसान मेला, गोष्ठी आदि के माध्यम से कृषक समुदाय की अर्थव्यवस्था को बढ़ाने के लिए समर्पित है। समीक्षाधीन अवधि के दौरान, उनचास हजार तीन सौ छत्तीस किसानों को प्रशिक्षित किया गया, तीन किसान मेले विभिन्न स्थानों पर आयोजित किए गए, पांच हजार सात सौ चार FLDs और अठत्तर OFT आयोजित किए गए।

प्रशासनिक

केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय की आवश्यकता के अनुरूप विश्वविद्यालय में प्रशासनिक सुधार शुरू किया गया है। प्रतिवेदित अवधि में चार सेवा संवर्ग का निर्माण किया गया, और सभी सेवाओं के लिए नियुक्ति एवं पदोन्नति के लिए नियम एवं विनियमन को अंतिम रूप दिया गया, पदोन्नति प्रक्रिया, डीपीसी और कैस के माध्यम से पदोन्नति, 56 शिक्षकों की नियुक्ति, कृषि विज्ञान केन्द्र में 32 एसएमएस और 63 तकनीकी और प्रशासनिक कर्मचारी की नियुक्ति की गई। साथ हीं कामकाजी महिलाओं, छात्राओं, एससी, एसटी, ओबीसी और अल्पसंख्यक छात्रों के लिए शिकायत निवारण प्रणाली / गैर–भेदभाव सेल का निर्माण किया गया।

आधारभूत संरचना

विश्वविद्यालय मौजूदा बुनियादी ढांचे के आधुनिकीकरण एवं नई संरचना का निर्माण कर रही है जिससे शिक्षण कार्य हेतु अत्याधुनिक सुविधा प्रदान की जा सके। ढोली परिसर में छात्रा छात्रावास का निर्माण पूरा हो गया तथा पूसा परिसर में छात्र–छात्रा के लिए छात्रावास का नवीनीकरण, आवासीय क्वार्टर, सड़क का निर्माण किया गया तथा पंडित दीनदयाल उपाध्याय उद्यान एवं वाणिकी महाविद्यालय, पिपराकोठी, साथ हीं केला अनुसंधान केन्द्र, गोरौल का निर्माण कार्य प्रगति पर है। समीक्षाधीन अवधि के दौरान चार नए कृषि विज्ञान केन्द्र स्थापित किए गए ।

वित्तीय

विश्वविद्यालय ने उचित रूपमें नियमों को लागू करने और कर्मचारियों के सभी दावों के त्वरित निपटारा के लिए पर्याप्त ध्यान दिया है, पीएफएमएस को लागू किया गया, खरीद को GeM पोर्टल के माध्यम से संसाधित किया गया तथा खरीद प्रक्रिया को सुव्यवस्थित किया गया, परामर्श, परीक्षण, लाइसेंसिंग, प्रशिक्षण, उत्पादों की बिक्री, शिक्षण शुल्क आदि के माध्यम से 6.41 करोड़ का राजस्व अर्जित किया गया और समीक्षाधीन अवधि के दौरान 100 प्रतिशत बजट का उपयोग किया गया।

पुरस्कार / मान्यता

राष्ट्रीय स्तर पर उनतीस वैज्ञानिकों को पुरस्कार मिला।

डॉ० राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, बिहार

संसद में वर्ष 2018–19 के लिए वार्षिक रिपोर्ट पेश करने में विलम्ब होने का कारण

डॉ राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, बिहार, पूसा, समस्तीपुर के संदर्भ में वर्ष 2018–19 की वार्षिक रिपोर्ट संसद के दोनों सदनों में प्रस्तुत की जानी थी। विदित हो कि राज्य विश्वविद्यालय से केन्द्रीय विश्वविद्यालय में बदलाव के पश्चात रिपोर्टिंग प्रारूप में मूलभूत बदलाव किया गया। सभी हितधारकों को बदले हुए रिपोर्टिंग प्रारूप के अनुरूप बदलाव लाने में समय लगा और इसलिए पूरी प्रक्रिया में देरी हुई। अब दो वर्षों का रिपार्ट तैयार होने और प्रारूप के मानकीकृत होने के साथ, 2019–20 की वार्षिक रिपोर्ट मई 2020 तक तैयार हो गई एवं इसे प्रबंध बोर्ड द्वारा अनुमोदित कर दिया गया है तथा माननीय कुलाध्यक्ष को उनके अवलोकन हेतु प्रस्तुत कर दिया गया है।

संसद में वर्ष 2018–19 के लिए वार्षिक रिपोर्ट देने में देरी के कारणों को दर्शाने वाला विवरण नीचे दिया गया है :–

विश्वविद्यालय के प्रबंधन बोर्ड द्वारा अनुमोदन के लिए वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करना	26.05.2020
प्रबंधन बोर्ड द्वारा वार्षिक रिपोर्ट की स्वीकृति	12.06.2020
कुलाध्यक्ष की मंजूरी के लिए वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करना	25.08.2020
कुलाध्यक्ष की स्वीकृति की प्राप्ति	05.02.2021
संसद के पटल पर प्रस्तुत करने हेतु वार्षिक प्रतिवेदन की मुद्रित प्रतियों को कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग को समर्पित करना	

कुलपति से प्राक्कथन

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा की तीसरी वार्षिक रिपोर्ट वर्ष 2018–19 को संक्षिप्त प्रारूप में प्रस्तुत करते हुए मुझे गर्व का अनुभव हो रहा है, यहपिछले एक वर्ष की उपलब्धियों पर प्रकाश डालता है। व्यापक जानकारी में रूचि रखनेवाले लोगों के लिए विस्तृत रिपोर्ट विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध कराया गया है। यह विश्वविद्यालय भारत के माननीय राष्ट्रपति श्रीरामनाथ कोविंद जी की उपस्थिति में दिनांक 15 नवंबर 2018 को अपना प्रथम दीक्षांत समारोह आयोजित कर गर्वान्वित महसूस कर रहा है, जिसमें स्नातक, परास्नातक और पीएचडी के 511 छात्रों को उनकी डिग्री से सम्मानित किया गया हैं। रिपोर्ट वर्ष के अवधि के दौरान, विश्वविद्यालय ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय बागवानी एवं वानिकी महाविद्यालय की स्थापना की है और छह नए स्नातकोत्तर कार्यक्रमों–फ्रूटसाइंस, फार्म मशीनरी एंड पावर इंजीनियरिंग, माइक्रोबायोलॉजी, कृषि व्यवसाय एवं ग्रामीण प्रबंधन, एक्वाकल्चर और फिशरीज रिसोर्स मैनेजमेंट की शुरुआत की है। वर्तमान में विश्वविद्यालय द्वारा 06 विषयों में स्नातक कार्यक्रम, 24 विषयों में स्नातकोत्तर कार्यक्रम और. 09 विषयों में पी.एच.डी प्रोग्राम चलाया जा रहा है।

विश्वविद्यालय कृषि और सम्बन्ध विज्ञान क्षेत्रों में योग्य पेशेवरों के विकास, फसल की विविधता और प्रौद्योगिकी के विकास के लिए अनुसंधान का संचालन, प्रौद्योगिकियों को अद्यतन करना और किसानों की क्षमता निर्माण व प्रौद्योगिकिया हस्तांतरण के माध्यम से इस क्षेत्र और राष्ट्र के समग्र कृषि विकास में अपना योगदान दे रहा है। विश्वविद्यालय ने भारत सरकार की नीति के अनुरूप त्वरित प्रसार गतिविधियों के साथ किसानों की आय को दोगुना करने और प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के लिए नई पहल शुरू की है।

मैं भारत के माननीय राष्ट्रपति एवं विश्वविद्यालय के विजिटर महामहिम श्री रामनाथ कोविंद जी, प्रो. पी.के. मिश्रा, विश्वविद्यालय के माननीय कुलाधिपति और श्री राधा मोहन जी, माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार को उनके असीम समर्थन और मार्गदर्शन के लिए आभार व्यक्त करता हूं। मैं डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार का उनके प्रोत्साहन और समर्थन के लिए बहुत आभारी हूं।

मैं सभी अधिष्ठाता, निदेशकों, कुलसचिव, विभागों के प्रमुख, परियोजनाओं के पी.आई., कृषि विज्ञान केन्द्रो के प्रमुख, वैज्ञानिकों / शिक्षकों और अन्य प्रशासनिक, तकनीकी और सहायक कर्मचारियों को रिपोर्ट के लिए बहुमूल्य जानकारी उपलब्ध करने के लिए धन्यवाद देता हूं।

Shrivastava

(रमेशचन्द्र श्रीवास्तव)
कुलपति

कार्यकारी सारांश

विश्वविद्यालय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, पारिस्थितिकी के अनुरूप स्थायी कृषि और किसान समुदाय के लिए सम्मानजनक आजीविका पर अपना ध्यान केंद्रित करते हुए जीवंत संगठन के रूप में उभर रहा है। छह नए पोस्ट ग्रेजुएट कार्यक्रमों जैसे फ्रूट साइंस, फार्म मशीनरी एंड पावर इंजीनियरिंग, माइक्रोबायोलॉजी, कृषि व्यवसाय प्रबंधन संस्थान, एक्वाकल्चर और फिश रिसोर्स मैनेजमेंट, पंडित दीनदयाल उपाध्याय बागवानी और वानिकी महाविद्यालय की स्थापना की है। वर्तमान में विश्वविद्यालय के अधीन 06 विषयों में स्नातक कार्यक्रम, 24 विषयों में स्नातकोत्तर कार्यक्रम और 09 विषयों में पीएच.डी. कार्यक्रम चल रहा है। छात्रों की कुल प्रवेश क्षमता में वृद्धि, छात्रावास सुविधाओं का उन्नयन, सॉफ्टस्किल और रोजगार में वृद्धि हेतु प्लेसमेंट यूनिट का पुर्नद्धार किया गया। नेट, जे.आर.एम., गेट आदि परिक्षाओं में 65 छात्रों को सफलता, पुस्तकालय सुविधाओं का उन्नयन और स्वचालन, विश्वविद्यालय के सभी कॉलेजों एवं संकायों को मजबूत करने के लिए अकादमिक प्रबंधन सॉफ्टवेयर की शुरूआत हमारे जीवंत एवं जागरूक होने का उचित प्रमाण है। विश्वविद्यालय ने 15 नवंबर, 2018 को भारत के माननीय राष्ट्रपति की उपस्थिति में प्रथम दीक्षांत समारोह का आयोजन किया, जिसमें स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी के 511 छात्रों को उपाधि प्रदान किया गया। सी.वी.आर.सी. द्वारा राजेंद्र कौनी (फॉक्सटेल) और राजेंद्र नीलम (एरोबिक धान) का विमोचन, एस.वी.आर.सी. द्वारा, धान (राजेंद्र सरस्वती) और विभिन्न कृषि जलवायु परिस्थितियों के लिए विश्वविद्यालय द्वारा राजेंद्र गेहुं –1 किस्म, कृषि उपज का मूल्यवर्धन, आवास एवं परिसर के अपशिष्ट प्रबंधन कार्यक्रम माध्यम से राजस्व सृजन, सौर प्रणाली के माध्यम से बिजली की आपूर्ति, मछली विक्रेताओं के लिए सौर गाड़ी का डिजाइन और 32 अ.भा.अ. परियोजना, 03 अंतर्राष्ट्रीय परियोजनाओं एवं 11 भारत सरकार की वित्त पोषित परियोजनाएं, बिहार सरकार वित्त पोषित 04 परियोजनाओं और विश्वविद्यालय वित्त पोषित 27 परियोजनाओं के माध्यम से तकनीकी का विकास और गोरौल (वैशाली) में केले अनुसंधान केंद्र की स्थापना, प्रमुख उपलब्धियां रहीहैं। चार नए कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना, विभिन्न स्थानों पर तीन किसान मेले का आयोजन और कृषि समुदाय के क्षमता विकास कार्यक्रम के साथ–साथ आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकी के प्रसार के लिए 49336 कृषि समुदाय के बीच प्रशिक्षण, प्रदर्शन, क्षेत्र भ्रमण और किसान गोष्ठी आदि के माध्यम से बेहतर प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और कृषक समुदाय और अन्य हितधारकों के बीच समझौता ज्ञापन किया गया। विश्वविद्यालय ने कृषि उत्पादों और अन्य संसाधनों से राजस्व के रूप में 6.41 करोड़ रुपये की राशि भी अर्जित की। तकनीकी सेवा नियम, प्रशासनिक सेवा नियम और गैर–शिक्षण कर्मचारियों के सहायक, तकनीकी और प्रशासनिक श्रेणियों और कैस योजना को लागू करके प्रशासनिक सुधार किया गया हैं।

विश्वविद्यालय के बारे में :

अक्टूबर, 2016 में स्थापित डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, पूर्व में स्थापित राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा (1970) और कृषि अनुसंधान संस्थान और कॉलेज, पूसा (1905), भारतवर्ष में संगठित कृषि शिक्षा, कृषि अनुसन्धान और कृषि प्रसार की अत्यंत समृद्ध विरासत हैं। कृषि और संबद्ध विषयों के क्षेत्र में शिक्षण, अनुसंधान और प्रसार के संबंध में विश्वविद्यालय का अधिकार क्षेत्र और जिम्मेदारी पूरे देश में विस्तारित और बिहार राज्य के विशेष संदर्भ में है।

लक्ष्य (Mission) :

- अनुभव आधारित, उच्च गुणवत्तायुक्त, शिक्षण वातावरण हेतु व्यापक परिदृश्य के निर्माण को बढ़ावा देना जो मिट्टी–पशु पौधा एवं मानव के सामाजिक–आर्थिक और पर्यावरणीय महत्व के मूल्य और समझदारी विकसित करता है।
- नवोंनमेषी केंद्रित शिक्षा, अत्याधुनिक अनुसंधान, उद्यमशीलता / स्टार्टअप कौशल विकास और उपयुक्त कृषि प्रौद्योगिकी के प्रसार के माध्यम से कृषि हितधारकों को आत्मनिर्भर बनाने में सहयोग करना।
- अग्रणी अनुसंधान और विकास के माध्यम से स्थायी खाद्य उत्पादन द्वारा राष्ट्रीय एवं वैश्विक आवश्यकताओं का स्थायी समाधान।
- पूर्वी भारत में कृषि को जलवायु परिवर्तन के अनुकूल प्रौद्योगिकी द्वारा उच्च उत्पादकता के माध्यम से कृषि भूमि पर दबाव कम करना।

भाविष्यिक–दृष्टिकोण (Vision)

क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और वैश्विक जरूरतों को पूरा करने एवं किसानो को सम्मानित आजीविका के लिए विशेष सेवाएं प्रदान करना एवं नैतिक मूल्यों के साथ कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में शिक्षा अनुसंधान और उद्यमशीलता में उत्कृष्टता को आगे बढ़ाने के लिए व्यावसायिक योग्यता को बढ़ाना।

अधिदेश (Mandate) :

- कृषि और संबद्ध क्षेत्रों की विभिन्न शाखाओं में शिक्षा प्रदान करना।
- कृषि और पशु उत्पादों की उत्पादकता और गुणवत्ता बढ़ाने के लिए उन्नत प्रौद्योगिकियाँ विकसित करने के लिए बुनियादी, रणनीतिक और व्यवहारिक अनुसंधान करना।
- किसानों में वैज्ञानिक जानकारी का प्रसार करना।
- आधार और प्रमाणित बीजों केउत्पादनएवं गुणन के लिए प्रजनक बीजों की आपूर्ति में राज्य सरकार की मदद करना।
- कृषि अनुसंधान और उद्योगों, गैर सरकारी संगठनों और अन्य लोगों के लिए अनुसंधान और विकास हेतु परामर्श सेवाएं और विशेषज्ञता प्रदान करना।

विश्वविद्यालय के कार्यकारी निकाय :

(अ) प्रबंधन मंडल

(ब) अनुसंधान परिषद

(स) विस्तार शिक्षा परिषद

(द) शैक्षणिक परिषद

विश्वविद्यालय प्रशासन :

कुलाध्यक्ष	:	श्री रामनाथ कोविंद, माननीय राष्ट्रपति, भारत सरकार
कुलाधिपति	:	प्रो. प्रफुल्ल कुमार मिश्रा
कुलपति	:	डॉ. रमेश चंद्र श्रीवास्तव
कुलसचिव	:	डॉ. रविनंदन
निदेशक, शिक्षा	:	डॉ. एम.एन. झा
निदेशक, अनुसंधान	:	डॉ. मिथलेश कुमार
निदेशक, प्रसार शिक्षा .	:	डॉ. के. एम. सिंह
निदेशक, छात्र कल्याण	:	डॉ. ए. के. मिश्रा
निदेशक, योजना	:	डॉ. (श्रीमती) आरती सिन्हा
नियंत्रक	:	श्री राधाकृष्ण प्रसाद

महाविद्यालयों के अधिष्ठाता :

डॉ. एस. के. वार्ष्णेय	अधिष्ठाता, कृषि स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा,समस्तीपुर
डॉ. हर्ष कुमार	अधिष्ठाता, आधार विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय, रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा,समस्तीपुर
डॉ. (श्रीमती) मीरा सिंह	अधिष्ठाता, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा, समस्तीपुर
डॉ. के. एम. सिंह	निदेशक, कृषि व्यवसाय एवं ग्रामीण प्रबंधन संस्थान, रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा, समस्तीपुर
डॉ. एल. एम. यादव	अधिष्ठाता, पंडित दीनदयाल उपाध्याय बागवानी एवं वानिकी महाविद्यालय, (पीपराकोठीमोतिहारी), रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा, समस्तीपुर
डॉ. आर. एस. वर्मा	अधिष्ठाता, कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय, रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा, समस्तीपुर
डॉ. एस. सी. राय	अधिष्ठाता, मत्स्यकी महाविद्यालय(ढोली), रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा, समस्तीपुर
डॉ. देवेंद्र सिंह	अधिष्ठाता, तिरहुत कृषि महाविद्यालय (ढोली),. रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा, समस्तीपुर

मुख्य उपलब्धियों की एक झलक

शैक्षणिक

- 1 नए यूजी और 6 नए पीजी कार्यक्रम की शुरूआत
- प्रवेश क्षमता 327 से 609, नामांकन –555, छात्र विविधता –21 राज्य
- नेट (NET) / एस.आर.एफ. (SRF) / जे.आर.एफ (JRF) / गेट (GATE) में सफलता – 65 छात्र
- एकल नामांकन प्रणाली । स्मार्ट क्लास रूम, डिजिटल नोटिस बोर्ड, सॉफ्टस्किल्स, कैरियर का विकास
- परामर्श और प्लेसमेंट सेल।
- नई प्रभेद जारी किया– 4, नई तकनीक विकसित – 6, नई परियोजना स्वीकृत – 12
- किसान मेला का आयोजन– 3

प्रशासनिक

- चार सेवा संवर्गों का गठन, सभी सेवाओं के लिए आर. आर. (R.R.) को अंतिम रूप देना और सभी संवर्गों को पदोन्नति प्रक्रिया, कैस एवं डी.पी.सी. द्वारा पदोन्नति।
- 56 संकाय सदस्य और कृषि विज्ञान केन्द्रो के 32 एस. एम.एस एवं 63 तकनीकी और प्रशासनिक कर्मचारियों का चयन।
- कामकाजी महिलाओं, छात्राओं, एस.सी., एस.टी., ओ.बी. सी. और अल्पसंख्यक छात्रों के लिए शिकायत निवारण प्रणाली / गैर–भेदभाव सेल।

आधारिक संरचना

- ति.कृ.महा.ढोली में लड़कियों के छात्रावास का निर्माण
- लड़कों और लड़कियों के छात्रावास, आवारा–गृह एवं सड़क का नवीनीकरण
- पंडित दीनदयाल उपाध्याय उद्यान एवं वानिकी महाविद्यालय एवं
- केला अनुसंधान केंद्र, गोरौल के लिए भवनों के निर्माण कार्य की शुरुआत
- 4 नए कृषि विज्ञान केन्द्रो की स्थापना

वित्तीय

- विश्वविद्यालय कर्मियों के उचित दावों के त्वरित निपटारा हेतु नियम सही रूप से लागू
- पी.एफ.एम.एस. लागू
- GeM पोर्टल द्वारा खरीद क्रम की प्रक्रिया नियमित
- कन्सलेंसी, जाँच, लाइसेंसिंग, प्रशिक्षण, उपादान की बिक्री, अध्ययन शुल्क आदि द्वारा 6.41 करोड़ रुपये आय
- शत–प्रतिशत वजह का उपयोग

शिक्षा :

विश्वविद्यालय ने फ्रूटसाइंस, फार्म मशीनरी एंड पॉवर इंजीनियरिंग, माइक्रोबायोलॉजी, कृषि व्यवसाय प्रबंधन, एक्वाकल्चर और फिशरीज रिसोर्स मैनेजमेंट में छह नए स्नातकोत्तर कार्यक्रमों की शुरुआत की और बागवानी और वानिकी में एक अंडर–ग्रेजुएट प्रोग्राम शुरू किया, फलस्वरूप अब स्नातक के 06 विषयों में, स्नातकोत्तर के 24 विषयों और पीएचडी के 09 विषयों में छात्रों की कुल प्रवेश संख्या में 327 से बढ़कर 609 हुई है। छात्रावास सुविधाओं का उन्नयन, सॉफ्टस्किल और रोजगार वृद्धि हेतु प्लेसमेंट यूनिट का पुनरुद्धार, पुस्तकालय सुविधाओं का उन्नयन और स्वचालन, भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसन्धान परिषद के सहयोग से विश्वविद्यालय के सभी कॉलेजों एवं संकायों को मजबूत करने के लिए अकादमिक प्रबंधन सॉफ्टवेयर के प्रयोग की शुरूआत हमारे जीवंत एवं जागरूक होने का प्रभाव है। अखिल भारतीय परीक्षाओं के आधार पर वर्ष 2018–19 में कुल 555 नए छात्रों को (21 राज्यों का प्रतिनिधित्व) विभिन्न स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी.कार्यक्रम में प्रवेश दिया गया। विश्वविद्यालय के छात्र विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में शामिल हुए और 65 छात्र नेट, एस.आर.एफ., जे.आर.एफ., गेट जैसी विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्ण हुए। भारत के माननीय राष्ट्रपति जी के मुख्य आतिथ्य में विश्वविद्यालय ने अपना पहला दीक्षांत समारोह दिनांक 15 नवंबर 2018 कोआयोजितकिया,जिसमें स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी के 511 छात्रोंनेभागलिया। कार्यक्रम में 33 स्वर्ण पदक सहित उन्हें उनकी डिग्री से सम्मानित किया गया, जिसमें से 22 स्वर्ण पदक छात्राओं को प्रदान किए गए। रिपोर्टिंग अवधि के दौरान, सभी 174 छात्रों (स्नातक 99, स्नातकोत्तर70 और पीएचडी05) ने अपनी–अपनी डिग्री प्राप्त की। सत्र 2018–19 में 97 प्रतिशत स्नातक सीटें (290 में से 282), 94 प्रतिशतस्नातकोत्तर (264 में से 247) और 96 प्रतिशतपीएचडी कार्यक्रम में (27 में से 26 सीटें) 21 राज्यों के छात्रों द्वारा भरी गई और स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी के लिए क्रमशरू 93, 94, एवं 100 प्रतिशत छात्रों का विभिन्न कार्यक्रम में प्रतिधारण, जो विश्वविद्यालय के शैक्षणिक वातावरण को दर्शाता है। विश्वविद्यालय बुनियादी ढांचे के विकास, स्वचालन और डिजिटलीकरण और शैक्षणिक सॉफ्टवेयर प्रबंधन प्रणाली की शुरुआत के माध्यम से अपने आधुनिकीकरण की ओर बढ़ रहा है। विश्वविद्यालय में पूर्व में ही सभी स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी के लिए केंद्रीकृत कैशलेस, सरल, डिजिटल, एकल प्रवेश प्रणाली शुरू हो चुकी है।

केंद्रीकृत प्रवेश प्रणाली

कार्यक्रम का नाम	प्रवेश क्षमता	प्रवेश		अवधारण		उत्तीर्ण
स्नातक	290	282	(97%)	262	(93%)	99
स्नातकोत्तर	264	247	(94%)	231	(94%)	70
पी.एच.डी.	27	26	(96%)	26	(100%)	05
नेट / एस.आर.एफ. / जे.आर.एफ. / गेटउत्तीर्ण : 65						

तिरहुत कृषि महाविद्यालय, ढोली के स्नातक के छात्रों ने रावे कार्यक्रम के तहत चाखजी गांव में सौर आधारित सिंचाई प्रणाली पर सर्वेक्षण किया।
(7 मार्च 2019)

दीक्षांत समारोह

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा ने 15 नवंबर, 2018 को भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद जी की अध्यक्षता में और विश्वविद्यालय के प्रथम विजिटर के आगमन पर दीक्षांत समारोह का आयोजन कर वर्ष 2018–19 में सबसे उल्लेखनीय आयोजन का साक्षी रहा। इस अवसर पर श्री लालजी टंडन, बिहार के माननीय राज्यपाल, श्री नीतीश कुमार, माननीय मुख्यमंत्री (बिहार), श्री राधा मोहन सिंह, माननीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार, श्री प्रेम कुमार, माननीय कृषि मंत्री, बिहार सरकार , श्री महेश्वर हजारी, माननीय मंत्री, भवन निर्माण, बिहार सरकार, श्री सुरेश शर्मा, माननीय मंत्री, शहरी विकास, बिहार सरकार, श्री अजय निषाद, माननीय संसद सदस्य, श्री राम नाथ ठाकुर, माननीय संसद सदस्य, जन प्रतिनिधि, सरकारी अधिकारी, प्रसिद्ध पेशेवर और स्नातक छात्रों के माता–पिता आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे । माननीय कुलपति, डॉ.आर.सी. श्रीवास्तव ने गणमान्य व्यक्तियों और अतिथियों का पहले दीक्षांत समारोह में स्वागत किया। दीक्षांत समारोह के दौरान स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी के 511 छात्रों को 33 स्वर्ण पदक सहित उनकी डिग्री से सम्मानित किया गया, जिसमें से 22 स्वर्ण पदक छात्राओं को प्रदान किए गए। सभी गणमान्य व्यक्तियों, संकाय सदस्यों और छात्र समुदाय ने उन स्नातकों को अपनी शुभकामनाएँ दीं जिन्होंने अपनी व्यावसायिक डिग्री के साथ अपने व्यावहारिक जीवन का एक नया अध्याय शुरू किया।

हमारा गौरवशाली क्षण– दीक्षांत समारोह 2018

छात्रों काप्लेसमेंट

संप्रेषण कौशल सहित व्यवहार कौशल विकास के उद्देश्य से प्लेसमेंट और करियरडेवलपमेंट यूनिट की स्थापना से देश की प्रतिष्ठित कंपनियों में विश्वविद्यालयकेछात्रों का बेहतर नियोजन हुआ।

प्लेसमेंट सेल, रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा, समस्तीपुर ने रैलिस इंडिया, डु–पोंटपायनियर, टेक्नोसर्व, टैफे (TAFE), एस्कॉर्ट (Escort), मैटिक्सफर्टीलिजेर्स (Mati-Fertilizers) और केमिकल्स लिमिटेड (ϐमउपबंसे स्जक), एक्सिस बैंक (।•पे ठंदा), जीविका इत्यादि सहित देश के प्रमुख प्रतिष्ठित नियोक्ताओं को आमंत्रित किया गया।

संसाधन सृजन :

विश्वविद्यालय ने विभिन्न सेवाओं के माध्यम से रिपोर्ट वर्ष में राजस्व सृजन (6.41 करोड़, पिछले वर्ष की तुलना में 37% की छलांग) में उल्लेखनीय प्रगति की है। इसने परामर्श के माध्यम से 58.0 लाख, परीक्षण के माध्यम से 1.14 करोड़, ट्यूशन शुल्क के माध्यम से 1.6 करोड़, लाइसेंस के माध्यम से 4.5 लाख, प्रशिक्षण के माध्यम से 5.2 लाख और बीज और आदानों की बिक्री के माध्यम से 2.9 करोड़ कमाए। विश्वविद्यालय के बीज उत्पादन कार्यक्रम के तहत गैर बीज के रूप में केवल 4.5% के साथ कुल बीज उत्पादन लगभग 390 टन था।.

अनुसंधान :

विश्वविद्यालय विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं के माध्यम से विभिन्न सामाजिक–आर्थिक समूह से संबंधित किसानों की आवश्यकता के अनुसार विभिन्न कृषि–पारिस्थितिकी के लिए उपयुक्त विभिन्न फसलों की प्रौद्योगिकी और किस्मों को विकसित करने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है। विश्वविद्यालय के वित्त पोषित परियोजनाओं हेतु आकस्मिक खर्च परामर्श और अनुबंध अनुसंधान द्वारा उत्पन्न आंतरिक राजस्व से पूरा किया जाता है।

विश्वविद्यालय अन्तर्गत शोध परियोजनाओं का विवरण

क्रम सं.	फंडिंग एजेंसी / परियोजना का नाम	परियोजनाओं की संख्या
1	अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाएँ	32
2	विदेशी सहायता प्राप्त परियोजनाएँ	03
3	भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित परियोजनाएँ	04
4	बिहार सरकार द्वारा वित्त पोषित परियोजनाएँ	4
5	विश्वविद्यालय द्वारा वित्त पोषित परियोजनाएँ	27

अ.	स्वीकृत नई परियोजना	:	12
ब.	1 करोड़ से ऊपर कीपरियोजनाएं	:	05
स.	50 लाख से ऊपर और 1 करोड़ से कम कीपरियोजनाएं	:	06
द.	नई अनुसंधान परियोजनाओंको मंजूरी के लिए प्रस्तुत कियागया	:	15

किस्में जारी

विभिन्न कृषि जलवायु परिस्थितियों के लिए राजेंद्र कौनी (फॉक्सटेल) और राजेंद्र नीलम (एरोबिक धान), सी.वी. आर.सी. द्वारा जारी, एस.वी.आर.सी द्वारा राजेंद्र सरस्वती और विश्वविद्यालय द्वारा राजेंद्र गेहुं –1, कृषि उपज का मूल्यवर्धन, विभिन्न अनुसंधानों के माध्यम से विभिन्न फसलों के लिए उत्पादन और संरक्षण प्रौद्योगिकी विकास, वर्ष की प्रमुख उपलब्धियां हैं। विश्वविद्यालय परिवर्तनशील जलवायु उच्च उपज देने वाली किस्मों और टिकाऊ कृषि एवं किसान की आय को दोगुना करने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक प्रौद्योगिकियों के विकास के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है।.

राजेन्द्र गेहूँ-1

राजेन्द्र कौनी-1

राजेन्द्र नीलम

राजेन्द्र सरस्वती

प्रौद्योगिकी विकसित / जारी

1. मछली के परिवहन के लिए राजेन्द्र मत्स्य बंधु नामक कम लागत वाले सौर ऊर्जा संचालित प्रशीतित वाहन का विकास।

सौर ऊर्जा संचालित मत्स्य बंधु

यह मछली के खुदरा विक्रेताओं को दिन के अंत में मजबूरन बिक्री से बचने में मदद करता है और साथ ही सड़क के किनारे मछली के भंडारण का एक स्वच्छ तरीका भी है। इसका इस्तेमाल शहर के मुहल्ले में घूमकर मछली बेचने के लिए भी किया जा सकता है। बिहार सरकार ने पहली बार 25 मत्स्यबंधु गाड़ियों का ऑर्डर दिया है जिनकी संख्या 1000 तक जा सकती है।.

भंडारण क्षमता : 30–40 किग्रा. अनुमानित लागत : रु. 1,10,000/–

2. ताल और दियारा क्षेत्र के लिए नाव आधारित सौर ऊर्जा संचालित सिंचाई प्रणाली

बोटमाउंटेड सोलर पंपिंग सिस्टम

सौर मॉड्यूल की क्षमता : 1800 WP
सबमर्सिबल पंप बिजली रेटिंग : 2 WP
डिस्चार्ज रिकॉर्ड किया गया : लगभग 15 मीटर के शीर्ष पर 5.75 सचेतक
दैनिक उत्पादन – 1 लाख लिटर्स

3. ट्रैक्टरट्रेलर आधारित सौर ऊर्जा संचालित सबमर्सिबल पंप

शक्ति : 2HP
ताल और दियारा क्षेत्र के लिए उपयुक्त सामान्य ट्रेक्टरट्रॉली सिंचाई क्षमता : 5–6 एकड़
अनुमानित लागत : 4.0 लाख

सौर मॉड्यूल की क्षमता	:	1800 WP सबमर्सिबल पंप
बिजली रेटिंग	:	2 HP
डिस्चार्जरिकॉर्ड किया गया	:	लगभग 15 मीटर के शीर्ष पर 5.75 सचेतक
दैनिक उत्पादन	:	1 लाख लिटर्स

4. घरेलू कचरा प्रबंधन

कंपोस्टेबल कचरे का उपयोग वर्मीकम्पोस्टिंग के लिए किया जाता है। प्लास्टिक कचरे रीसाइक्लिंग के बाद, विक्रेताओं के माध्यम से निपटाया जाएगा और अन्य कचरे को लैंडफिल के रूप में निपटाया जाएगा।

5. बिहार की कृषि–पारिस्थितिकी पपीता रोगों के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकी

- पौध रोपण समय–पपीता को बरसात के बाद अक्टूबर के महीने में लगाया जाना चाहिए
- अंकुरित–पपीता के बीजों को नायलॉन के जाल (40–60 जाली) के नीचे और ऐसफेट / 1.5 ग्राम / लीटर का छिड़काव करना चाहिए, रोपण के 3 दिन पहले देना चाहिए।
- रोधक फसल का उपयोग–दो पंक्तियों सेसबानिया को रोधक फसल के रूप में उगाया जाना चाहिए।
- पोषक तत्व का उपयोग– यूरिया–10 ग्राम/लीटर, जिंक सल्फेट–1.5 ग्राम और बोरॉन 1.0 ग्राम प्रति लीटर के साथ मिलाकर 8 महीने तक मासिक अंतराल पर छिड़काव करना चाहिए।

- प्रोद्योगिकी पेटेंट हेतु आवेदन–5
- शोध प्रकाशन – 161

प्रसार :

विश्वविद्यालय ने तकनीकी जानकारी प्रसार हेतु के प्रसार शिक्षा निदेशालय और कृषि सूचना प्रौद्योगिकी केंद्र (ए.टी. आई.सी), मुख्यालय स्तर पर, कृषि सलाहकार सेवा और विश्वविद्यालय के क्षेत्राधिकार के तहत विभिन्न जिलों में 13 कृषि विज्ञान केन्द्रोमें पर्याप्त आधारभूत संरचना और कुशल प्रणाली विकसित की है। प्रदर्शन, फील्डविजिट, किसान गोष्ठी और किसान मेला आदि के माध्यम से मशरूम उत्पादन, शहद उत्पादन, वर्मी–कम्पोस्टिंग आदि के क्षेत्र में किसान समुदाय को प्रशिक्षित किया गया। वर्ष 2018–19 के दौरान बिहार दिवस के दौरान किसान मेला का आयोजन पटना, चंपारण महोत्सव, मोतिहारी में और डॉ. राजेंद्र प्रसाद के जन्म स्थान जीरादेई में, 3 दिसंबर, 2018 को किया गया जो इस वर्ष की कुछ महत्वपूर्ण प्रसार गतिविधियाँ रही। कृषि–परामर्शी सलाहकार सेवा के तहत, लगभग 1.60 लाख लोगों को हर महीने मौसम के पूर्वानुमान और जलवायु अनुकूल कृषि निर्णय लेने के लिए मूल्यवर्धित जानकारी से संबंधित मोबाइल सन्देश (एस.एम.एस.) दिए गए।

प्रसार गतिविधियाँ	गतिविधियाँ / किसानों की संख्या
किसानों का प्रशिक्षण	49336
किसान मेला का आयोजन	3
एफ.एल.डी.(FLDs) –	5704
ओ.एफ.टी (OFTs) –	78

प्रसार गतिविधियों की झलक :

हमारे देश के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद की 134 वीं जयंती और रा.प्र.के.कृ. वि. के स्थापना दिवस पर कृषि शिक्षा दिवस सह किसान मेले का आयोजन जीरादेई में किया गया।

26 जनवरी, 2019 समारोह के अवसर श्री जगदेव प्रसाद कुशवाहा, प्रगतिशील कृषक, पूर्वी चम्पारण को अभिनन्दन किसान पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

ओ.एफ.टी.(OFT) के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र, बेगूसराय द्वारा बच्चों (6 महीने से 1 वर्ष) के लिए महत्वपूर्ण निविष्टियां वितरित किए गए।

कृषि विज्ञान केन्द्र, शिवहर द्वारा दाल के प्रदर्शन पर क्षेत्र दिवस।

कृ.वि.के. दरभंगा में मशरूम उत्पादन पर प्रशिक्षण

के.वि.के. बेगूसराय द्वारा दाल मिल का प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली में गुणवत्ता बीज उत्पादक पर कौशल विकास प्रशिक्षण आयोजित किया गया था। नोडल अधिकारी, कृषि विज्ञान केन्द्र ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। (10 जनवरी 2019)

मसूर और सरसों (आरशुफलाम) पर सी.एफ.एल.डी के क्षेत्र दिवस का आयोजन कृषि विज्ञान केन्द्र, शिवहर द्वारा किया गया था। (8 फरवरी 2019)

पुरस्कार / सम्मान : 39

सर्वश्रेष्ठ कृषि विज्ञान केन्द्र पुरस्कार : 01

डॉ. आर.सी. श्रीवास्तव, माननीय कुलपति को निम्नलिखित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

1. सोसायटी फॉर एग्रीकल्चर इनोवेशन एंड डेवलपमेंट, रांची द्वारा लाइफ टाइम अचीवमेंटअवार्ड
2. बायोवेड रिसर्चइंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर टेक्नोलॉजी एंड साइंसेज, इलाहाबाद द्वारा बायोवेड ऑनरेरीफेलोशिप
3. अमित सिंह मेमोरियल फाउंडेशन द्वारा अमित प्रभु मनीषी पुरस्कार
4. इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ओरिएंटल हेरिटेज, कोलकाता द्वारा स्वामी विवेकानंद उत्कृष्टता पुरस्कार

8–10 फरवरी, 2018 के दौरान भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान, भोपाल में आयोजित जैविक खाद्य और पर्यावरण सुरक्षा के लिए जैविक अपशिष्ट प्रबंधन पर राष्ट्रीय सम्मेलन में डॉ. शंकर झा, सहायक प्राध्यापक, मृदा विज्ञान ने विश्वविद्यालय परिसर अपशिष्ट प्रबंधन रणनीतियाँ नई पहल पर सर्वश्रेष्ठ पोस्टर पुरस्कार प्राप्त किया।.

अल्पना कुसुम, स्नातकोत्तर छात्रा, मृदा विज्ञान विभाग, को 15–16 मार्च, 2019 के दौरान बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर में आयोजित मृदा विज्ञान में अखिल भारतीय स्नातकोत्तर छात्र अनुसंधान सम्मेलन के मौखिक प्रस्तुति में द्वितीय पुरस्कार मिला।

अवसंरचना विकास / नवीनीकरण :

विश्वविद्यालय ने जलवायु परिवर्तन, जल प्रबंधन, मवेशी नस्ल सुधार, बागवानी विकास, विश्वविद्यालय निवासियों के स्वास्थ्य इत्यादि जैसे मुद्दे के समाधान के लिए उचित बुनियादी ढाँचा शुरू / विकसित किया है, कुछ महत्वपूर्ण बुनियादी ढाँचे की पहल नीचे दी गई है।

नए सुविधाओं का विकास :

1. लड़कियों का छात्रावास

2. विश्वविद्यालय प्लाजा

नवीनीकरण पूर्ण :

1. फार्म मशीनरी परीक्षण केंद्र
2. लड़के एवं लड़कियों का छात्रावास

3. मत्स्यकी महाविद्यालय

4. आवासीय–गृह

5. विद्यापति सभागार

6. पहुँच–मार्गों एवं सड़को का विधुतीकरण / प्रकाशीकरण

निर्माण की पहल :

1. जलवायु परिवर्तन में एडवांस अध्ययन केंद्र की स्थापना
2. जल प्रबंधन में उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना
3. भ्रूण हस्तांतरण तकनीक के उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना
4. स्वदेशी मवेशियों की नस्ल संरक्षण
5. केला अनुसंधान केंद्र
6. सब्जी बीज उत्पादन
7. कृषि व्यवसाय एवं ग्रामीण प्रबंधन संस्थान

उद्यमिता विकास कार्यक्रम के लिए विभिन्न इकाइयाँ :

1. मशरूम (उत्पादन, औषधीय मूल्य और मूल्य वर्धित उत्पाद)
2. वर्मी–कम्पोस्ट (उत्पादन, किसानों को आपूर्ति)
3. मधुमक्खी पालन
4. गुड़प्रसंस्करण
5. डेयरी यूनिट

बीज उत्पादन इकाई

मधुमक्खी पालन पर प्रशिक्षण

वर्मीकम्पोस्ट पर प्रशिक्षण की झलकियाँ

मशरूम फार्म

प्रशासनिक सुधार

- प्रशासनिक सुधारों जैसे तकनीकी सेवा नियम, प्रशासनिक सेवा नियम, सहायक अध्यापकों, गैर–शिक्षण कर्मचारियों, तकनीकी और प्रशासनिक श्रेणियों की प्रोन्नती हेतु, कैस योजना की मंजूरी, विभिन्न परिषदों और बोर्डों के गठन आदि लागू किया गया है।
- तकनीकी, कुशल सहायक और प्रशासनिक कर्मचारियों के लिए कैडर निर्माण।

- सेवा नियम और भर्ती नियम,
- डिपार्टमेंटल प्रमोशन कमिटी. (DPC), कैस (CAS) के माध्यम से पदोन्नति

नव नियुक्ति :

संकाय – 56; एसएमएस –32

राजभाषा का प्रचार :

हिंदी पखवाड़ा 10.09.2018 से 24.09.2018 तक आयोजित किया गया था जिसका उद्घाटन माननीय कुलपति द्वारा 10.09.2018 को विद्यापति सभागार, रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा में किया गया। इस दौरान विद्यालयों, महाविद्यालयों और संकायों के हिंदी भाषी तथा गैर हिंदी भाषी छात्रों के लिए निबंध, वाद–विवाद, सुरक्षा, सामान्य ज्ञान और चित्रकला जैसे प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। शिक्षकों/वैज्ञानिकों के बीच हिंदी तकनीकी लेख प्रतियोगिता और प्रशासनिक/सहायक कर्मचारियों के बीच हिंदी आधिकारिक नोट्स लेखन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। 23.09.2018 को आकाशवाणी, पटना के कलाकार द्वारा एक हिंदी काव्य गोष्ठी भी आयोजित की गई। 24.09.2018 को आयोजित स्थापना समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं के 52 विजेताओं (46 छात्रों/03 वैज्ञानिकों और 3 प्रशासनिक/सहायक कर्मचारियों) को माननीय कुलपति, डॉ. आर. सी. श्रीवास्तव द्वारा प्रमाण पत्र और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।.

10.09.2018 से 24.09.2018 के दौरान हिंदी पखवाड़ा

विश्वविद्यालय पुस्तकालय

विश्वविद्यालय पुस्तकालय, विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक समुदाय और उसके उपयोगकर्ताओं को 80,000 से अधिक मुद्रित पुस्तकों के साथ 3960 संदर्भ पुस्तकों, 3500 इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट पत्रिकाओं, प्रोजेक्ट रिपोर्ट, कृषि और संबद्ध विज्ञान में डिजिटल संसाधनों के साथ संभव सर्वोत्तम जानकारी उपलब्ध करा रहा है। । पुस्तकालय में छात्रों, संकायों और कर्मचारियों सहित 2000 से अधिक उपयोगकर्ता हैं। वर्ष 2018–19 के लिए दर्ज किए गए कुल छात्रों और संकायों का फुटफॉल क्रमशः 46,057 और 1525 था। कोहा (KOHA)–एकीकृत पुस्तकालय प्रबंधन सॉफ्टवेयर का उपयोग करके सभी कार्यो को पुस्तकालय में स्वचालित किया जा रहा है। उपयोगकर्ताओं के साथ आउटरीच कनेक्टिविटी कार्यक्रमों के तहत, दो शाखा पुस्तकालय (तिरहुत कृषि महाविद्यालय, ढोली पुस्तकालय और मत्स्यकी पुस्तकालय) भी कोहा–आई.एल.एम.एस. के माध्यम से मुख्य पुस्तकालय से जोड़ा गया हैं और उनका पाठ्य सामग्री ओपेक (OPAC) का उपयोग कर ब्राउज किया जा सकता है। पुस्तकालय कैब डायरेक्ट (CAB - Direct), एग्रीस (AGRIS), इंडिया एग्रीस्टेट (India Agristat) और कृषि कोष (Krishikosh) जैसे ई–डेटा बेस का भी सदस्यता ले रहा है।

पुस्तकालय सेवाएँ :

आईसीटी (ICT) और अनुसंधान सहायता सेवा :

- नवीनतम अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ सूचना और ज्ञान प्रणाली का निर्माण और रखरखाव।
- शिक्षण और अनुसंधान का मदद करने के लिए सात्यापित संग्रह और प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- संपूर्ण साहित्य खोज और समीक्षा के लिए उद्धरण और पूर्ण पाठ।

सूचना और प्रलेखन सेवाएँ :

- त्वरित जागरूकता सेवा(CAS) और एस.डी. आई. (SDI)
- सेरा (CeRA) के माध्यम से ई–दस्तावेज वितरण सेवाएँ
- डिजिटलरेफरेंससर्विसेज (डी.आर.एस.) ऑटो–सर्कुलेशनसर्विसेजप्रिंटिंग और रिप्रोग्राफी 24 × 7 क्लाउड आधारित ओपेक (OPAC)
- कंप्यूटर लैब सुविधा के साथ डिजिटललर्निंग संसाधन

ऐरिस सेल

विश्वविद्यालय मुख्यालय परिसर केसभी विभागों, अनुसंधान और प्रसार इकाइयों तथा महाविद्यालयों के बीच संपर्क स्थापित करने के लिए मुख्यालय के रूप में ऐरिस सेल की स्थापना में की गई है।

सेवाएं :

- विश्वविद्यालय ई–मेल खाते का निर्माण और सभी छात्रों और नए शामिल कर्मचारियों के लिए इंटरनेट खाता खोलना।
- विश्वविद्यालय लोकल एरिया नेटवर्क का दिन–प्रति–दिन रखरखाव।
- कंप्यूटर प्रणाली का रखरखाव।
- दैनिक अद्यतन गतिविधियों के लिए विश्वविद्यालय की वेबसाइट का रखरखाव। एकीकृत जोखिम प्रबंधन आवेदन द्वारा उपयोगकर्ता के डाटा ट्रैफिक की निगरानी। डिजिटल नोटिस बोर्डों के माध्यम से विभिन्न सूचना सामग्री का प्रकाशन।
- विज्ञापित विभिन्न पदों के लिए कंप्यूटर प्रवीणता परीक्षा का आयोजन।
- प्लेसमेंट के लिए स्काइप साक्षात्कार इत्यादि।

वित्तीय अवलोकन :

(रु. करोड़ में)

क्रम सं.	ब्योरेवार विवरण	डेयर (DARE) द्वारा प्रदत्त	व्यय
1	ग्रांट–इन–एड (सैलरी)	75.20	75.20
2	ग्रांट–इन–एड (जनरल)	9.00	9.00
3	ग्रांट–इन–एड (कैपिटल)	45.36	45.36
	कुल	**129.56**	**129.56**

तमसो मा ज्योतिर्गमय

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय